टिप्पणी

3

त्याज्यं न धैर्यम्

जीवन में प्रायः संकट आते रहते हैं। चाहे मनुष्य हो, अथवा पशु, पक्षी, सभी को हर तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। विकट परिस्थिति में शिक्षा, अभ्यास और अनुभव बड़े काम आते हैं। ऐसी अवस्था में विशेष रूप से धैर्य, सही समय का चुनाव, प्रत्युत्पन्नमतित्व, विवेक आदि गुण बड़े उपयोगी सिद्ध होते हैं।

प्रस्तुत पाठ के अनुसार जब बन्दर के प्राण संकट में पड़ जाते हैं तो आइए देखें, वह किस प्रकार धैर्य एवं चतुराई से अपने प्राणों की रक्षा करने में सफल हो जाता है।

उद्देश्यानि

प्रस्तुतपाठं पठित्वा भवान्/भवती

- जीवने धैर्यस्य महत्त्वं वर्णयिष्यति;
- कथाक्रमेण वाक्यानि लेखिष्यति;
- विशेष्यविशेषणपदानां वाक्येषु प्रयोगं करिष्यति;
- वृद्धिसन्धियुक्तपदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति;
- क्त्वा, त्व, तल्– प्रत्ययान्तानां पदानां वाक्ये प्रयोगं करिष्यति;
- पाठान्तर्गतानाम् अव्ययपदानां चयनं करिष्यति;

क्रियाकलापः 3.1

आप जानते हैं कि लोग समाज के विभिन्न कार्यक्षेत्रों में काम करते हैं। कृषि, सेना, व्यापार, जहाजरानी, शिक्षा, चिकित्सा आदि कार्यक्षेत्रों में काम करने वालों के जीवन में कठिन समय आता रहता है। उन्हें अपने सूझ–बूझ, धैर्य और साहस के साथ सामना करके परिस्थिति के

साथ सामंजस्य करना पड़ता है।

नीचे दो स्तम्भ दिये गये हैं। 'क' स्तम्भ में विभिन्न व्यवसाय के लोग हैं 'ख' स्तम्भ में उनके कार्यक्षेत्र से संबंधित कठिन परिस्थितियाँ हैं। दोनों का शुद्ध मिलान करके जान सकेंगे कि धैर्य, साहस आदि गुण जीवन में कितने आवश्यक हैं।

'क'	'ख'
1) चिकित्सकः	क) परीक्षासमये
2) सेनानायकः	ख) युद्धे
3) जलयानस्य चालकः	ग) शल्यक्रियामध्ये
4) व्यापारी	घ) झंझावाते
5) राजनीतिज्ञः	ङ) धनहानौ
6) शिक्षार्थी	च) साम्प्रदायिककलहेषु

उपर्युक्त दोनों स्तम्भों में 1 को ग से, 2 को ख से, 3 को घ से, 4 को ङ से, 5 को च से, 6 को क से मिलाकर लिखिए।

संकट सभी के जीवन में आते हैं। जैसे चिकित्सक के लिए शल्यक्रिया में सर्वप्रथम धैर्य की ही आवश्यकता होती है। देखिए, इस कथा में वानर मगर के चंगुल से धैर्य के सहारे कैसे अपने प्राणों की रक्षा करता है?

3.1 इदानीं मूलपाठं पठामः

प्रथमः एकांशः

आसीत् समुद्रसमीपे विशालः फलैः पूरितः जम्बुवृक्षः। तस्मिन् वृक्षे बलिष्ठो रक्तमुखनामकः वानरः वसति स्म। एकदा करालमुखः नामको मकरः वानरम् अपश्यत् अचिन्तयत् च यत् अयं वृक्षवासी स्वस्थः चञ्चलः निर्भीकः इव प्रतिभाति। अयं मम सहचरो भवतु इति मत्वा प्रतिदिनं सस्नेहं वार्तां करोति। वानरः अपि कथयति यत् भवान् मम अतिथिः। भक्षयतु मधुराणि जम्बुफलानि। उक्तं च–

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुङ्क्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्॥

नानविधकथाप्रसंगेन तौ उभौ अपि सुखेन कालं नयतः स्म।

टिप्पणी

शब्दार्थः

अतिथिः = मेहमान,
ददाति = देता है,
प्रतिगृह्णाति = स्वीकार करता है,
गुह्यम् = गोपनीय बात,
आख्याति = कहता है,
पृच्छति = पूछता है,
भुङ्क्ते = खाता है,
भोजयते = खिलाता है,
षड्विधं = छः प्रकार के,
करालमुखः = भयंकर मुख वाला (संज्ञा),
भक्षितशेषाणि = खाने के बाद बचा हआ,
खादित्वा = खाकर,
एतादृशानि = ऐसे,
आनय = लाओ,
प्रत्युत्तरति = उत्तर देता है,
शक्यम् = सम्भव है,
अन्यथा = वरना,
त्यजामि = छोड़ता हूँ,
भार्यायाः = पत्नी के,
भ्रातृजाया = भाभी,
त्वां = तुम्हें,
स्मरति = याद करती है,
अद्य = आज,
मम = मेरे,
तरणे = तैरने में,
गच्छेयम् = जा सकता हूँ,
भवान् = आप,
पृष्ठम् = पीठ पर,
आरूढम् = बैठे हुए को
पृच्छति = पूछता है,
तरणे = तैरन में,
त्वदीयम् = तुम्हारा,
खादितुम् = खाना
इच्छति = इच्छा करती है,

चित्र 3.1: वानर एवं मगरमच्छ

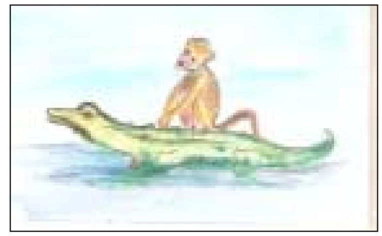

चित्र 3.3

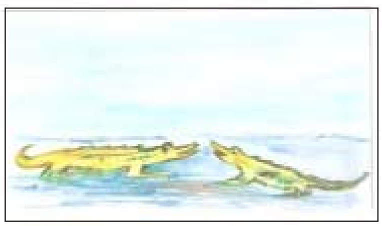

चित्र 3.2

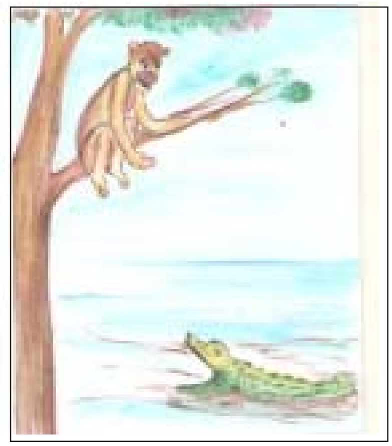

चित्र 3.4

द्वितीयः एकांशः

करालमुखः मकरः प्रतिदिनं भक्षितशेषाणि जम्बुफलानि गृहं गत्वा भार्यायै यच्छति। मकरी तानि फलानि खादित्वा मकरं कथयति अहो! तव मित्रं प्रतिदिनम् एतादृशानि मधुराणि फलानि खादति तस्य हृदयं कीदृशं मधुरं भवेत्। तम् आनय। मकरः प्रत्युत्तरति– कथम् इदं शक्यम्? मित्रस्य मरणं न चिन्तयामि। मकरी वदति– अहं न जानामि। तम् अवश्यम् आनय अन्यथा उपवासं कृत्वा जीवनं त्यजामि। भार्यायाः कथनेन मकरः वानरं कथयति– 'तव भ्रातृजाया त्वां स्मरति। अद्य मम गृहे तव भोजनम् अस्ति।' वानरः कथयति– अहं तु तरणे असमर्थः। कथमहं त्वया सह गच्छेयम्? मकरः वदति– भवान् चिन्तां न करोतु। मम पृष्ठम् आरूढं भवन्तं सुखेन नयामि तस्य विश्वासं कृत्वा सरलहृदयः वानरः तस्य पृष्ठम् आरूढः।

तृतीयः एकांशः

जलमध्ये गत्वा मकरः पृच्छति– जानासि किम्? किमर्थं त्वां नयामि इति? त्वदीयं मधुरं हृदयं खादितुम् इच्छति तव भ्रातृजाया।

वानरः धैर्येण प्रतिवदति– 'पूर्वं कथं न कथितं त्वया? मम हृदयं तु कोटरे तिष्ठति। यदि मम हृदयेन एव कार्यं, तदा नास्ति मम आपत्तिः। परन्तु तदर्थं मां तं वृक्षं प्रति नय।' मूर्खः मकरः तीरं प्रति आगच्छति। तदा वानरः उत्प्लुत्य वृक्षम् आरुह्य वदति – 'भो मूर्ख! न कोऽपि जीवः हृदयं विना जीवति। न वा तत् पृथक् कर्तुं शक्यते। अतः त्वं गच्छ, पत्नीं च प्रीणय। समाप्ता आवयोः मैत्री।'

अतः उक्तम्– समुत्पन्नेषु कार्येषु बुद्धिर्यस्य न हीयते।
स एव दुर्गं तरति जलस्थो वानरो यथा॥

टिप्पणी

तीरं प्रति = किनारे की ओर,
उत्प्लुत्य = उछल कर,
आरुह्य = चढ़ कर,
आवयोः = हम दोनों की।

बोधप्रश्नाः

1. **पाठं पठित्वा अधोलिखितवाक्येषु रिक्तस्थानपूर्त्तिं कुरुत।**

   (i) समुद्रसमीपे .... फलैः .... जम्बुवृक्षः आसीत्।

   (ii) तस्मिन् .... बलिष्ठः .... वानरः प्रतिवसति स्म।

   (iii) अयं मम .... भवतु।

   (iv) तयोर्मध्ये .... अभवत्।

   (v) नानाविधकथाप्रसंगेन उभौ अपि सुखेन कालं .... स्म।

2. **अधोलिखितशब्देषु विशेष्यविशेषणपदानां संयोजनं कुरुत।**

'क'	'ख'
विशेष्यपदानि	विशेषणपदानि
क) वानरः	1. समुत्पन्नेषु
ख) वृक्षः	2. मधुरम्
ग) जम्बुफलानि	3. बलिष्ठः
घ) हृदयम्	4. फलैः पूरितः
ङ) कार्येषु	5. मधुराणि

3. **मञ्जूषायां दत्तानि अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत।**

   (i) वानरः .... सस्नेहं वार्तां करोति।

   (ii) .... करालमुखः नाम मकरः वानरम् अपश्यत्।

(iii) नानाविधकथाप्रसंगेन उभौ .... सुखेन कालं नयतः स्म।

(iv) वानरः कथयति .... भवान् मम अतिथिः।

(v) अयं मम सहचरो भवतु .... मत्वा सस्नेहं वार्ता करोति।

अव्ययपदानि– एकदा, यत्, इति, प्रतिदिनम्, अपि

3.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

3.2.1 प्रथमः एकांशः

आसीत् समुद्रसमीपे .... नयतः स्म।

व्याख्याः टिप्पणयश्च

बलिष्ठः रक्तमुखनामकः वानरः– रक्तमुख नाम का अधिक बलशाली बन्दर।

रक्तमुख का अर्थ होता है लाल मुख वाला। प्रायः वानरों के मुख लाल होते हैं। वह बलिष्ठ अर्थात् बहुत अधिक बलशाली था। वह बन्दर समुद्र के पास जामुन के वृक्ष पर रहता था।

करालमुखः मकरः– करालमुख नाम का मगरमच्छ। मगरमच्छ का मुख सबसे अधिक विशाल और भयानक होता है, अतः लेखक ने उसका नाम करालमुखः रखा है। रक्तमुखः और करालमुखः का अन्तर समझिये।

भवान् मम अतिथिः– बन्दर मगरमच्छ को अतिथि मान कर उसका सम्मान करता है। आपने पहले पाठ में भी अतिथि के महत्त्व के विषय में पढ़ा है। भारतीय संस्कृति में अतिथि को देवता माना जाता है– 'अतिथिदेवो भव'। वानर मगरमच्छ को अतिथि मान कर जामुन के मीठे फल उसे नित्य खाने के लिए देता है।

षड्विधं प्रीतिलक्षणम्– मित्रों के मध्य प्रेम को बढ़ाने के लिए छः तरीके बताए गये हैं। जब नया मित्र बनाते हैं तब अनेक प्रकार के व्यवहार होते हैं। वह ददाति = देता है। प्रतिगृह्णाति = उपहार स्वीकार करता है। गुह्यम् = गोपनीय बातों को। आख्याति = कहता है। पृच्छति = पूछता है। भुङ्क्ते = भोजन करता है। भोजयते = भोजन कराता है। इन छः क्रियाओं से प्रेम बढ़ता है।

श्लोकान्वयः–

ददाति, प्रतिगृह्णाति, गुह्यम् आख्याति, पृच्छति, भुङ्क्ते, भोजयते च एवम् षड्विधम् प्रीतिलक्षणम् अस्ति।

व्याकरणबिन्दवः

भूतकाल को बताने के लिए 'लङ्' लकार का प्रयोग किया जाता है जैसे– अपश्यत् = देखा,

टिप्पणी

अचिन्तयत् = सोचा। इसके अतिरिक्त वर्तमान काल के क्रियापद के साथ 'स्म' लगाने से भी भूतकाल का बोध होता है। प्रतिवसति- रहता है। प्रतिवसति स्म- रहता था।

विशेष्य- जिस की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं।

विशेषण- विशेषण वह है जो किसी वस्तु या व्यक्ति की विशेषता को बताता है। 'रक्तदुर्ग': यहाँ दुर्ग की विशेषता बताई जा रही है। अतः दुर्ग विशेष्य है। रक्त विशेषण है।

भोजयते-

यहाँ प्रेरणार्थक 'णिच्' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है। जैसे खाना-खिलाना, करना-कराना, देना-दिलाना इन पदों के अर्थ को देखिए- राम खाता है। यहाँ खाने की क्रिया राम स्वयं करता है। राम खिलाता है। इस वाक्य में खाने की क्रिया राम नहीं, कोई और करता है। यहाँ खाने की क्रिया के प्रेरक के रूप में राम है। विशेष प्रयोग योग्यता विस्तार में देखें।

पाठगतप्रश्नाः 3.1

1. उचितपदचयनं कृत्वा संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत।

(i) समुद्रतीरे फलैः पूरितः कः वृक्षः आसीत्? (आम्रवृक्षः/जम्बुवृक्षः)

(ii) रक्तमुखः वानरः वृक्षे किं खादति स्म? (आम्रफलानि/जम्बुफलानि)

(iii) अयं मम सहचरः भवतु इति कः चिन्तयति? (रक्तमुखः/करालमुखः)

(iv) नानाविधकथाप्रसंगेन कयोर्मध्ये मैत्री अभवत्? (मकरीमकरयोः/मकरवानरयोः)

2. अधोलिखितपदैः वाक्यरचनां कुरुत।

(i) रक्तमुखः, नाम, तस्मिन्, वानरः, वृक्षे, वसति स्म।

....

(ii) जम्बुवृक्षः, फलैः, आसीत्, पूरितः, समुद्रसमीपे।

....

(iii) वानरम्, पश्यति, मकरः, करालमुखः।

....

(iv) जम्बुफलानि, भक्षयतु, मधुराणि।

....

टिप्पणी

(v) कालं, सुखेन, नयतः स्म, तौ, उभौ।

....

3. अधोलिखितकथनेषु सत्यम् (√) असत्यम् (×) इति चिह्नाङ्कनं कुरुत

(i) वानरस्य नाम करालमुखः आसीत्। ( )

(ii) जम्बुवृक्षः समुद्रस्य समीपे आसीत्। ( )

(iii) वानरः भयङ्करः निर्बलः च आसीत्। ( )

(iv) वानरः मकराय अतिथिं मत्वा जम्बुफलानि यच्छति। ( )

(v) प्रीतिलक्षणं पञ्चविधम्। ( )

3.2.2 द्वितीयः एकांशः

करालमुखः .... आरूढ़ः।

व्याख्याः टिप्पण्यश्च

भक्षितशेषाणि–खाने से बचे हुए। मगरमच्छ वानर द्वारा दिये हुए जामुन खाता है। शेष जामुनों को वह अपनी पत्नी को ले जाकर देता है।

भार्यायै यच्छति– जिसको दिया जाये उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है। 'भार्या' शब्द से चतुर्थी एकवचन में भार्यायै रूप बनता है, पुल्लिंग में 'देव', 'राम' आदि शब्दों से 'देवाय' 'रामाय' इत्यादि शब्द बनते हैं।

खादित्वा– खाद् + इ + क्त्वा (त्वा) = खाकर, गत्वा– गम् + क्त्वा (त्वा) = जाकर।

मगरमच्छ की पत्नी मीठे जामुन खाकर सोचती है कि उस बन्दर का हृदय कितना मधुर होगा जो प्रतिदिन इतने मीठे फल खाता है। वह मगरमच्छ को आदेश देती है– तम् आनय = उसे ले आओ। मगरमच्छ परेशान है, कैसे मित्र को मारने के लिए जाए। अतः वह कहता है – 'कथम् इदं शक्यम्' यह कैसे हो सकता है? अन्त में मगरमच्छ अपनी पत्नी की जिद के आगे झुक जाता है और वानर को लाने के लिये चल पड़ता है। वह वानर को कहता है कि उसकी भाभी ने उसे खाने पर बुलाया है। बन्दर तो तैरना नहीं जानता था। अतः वह कहता है– अहं तु तरणे असमर्थः= मैं तो तैरने में असमर्थ हूँ। कैसे तुम्हारे साथ जा सकता हूँ? मगरमच्छ उसे उपाय बताता है कि वह उसे अपनी पीठ पर बैठा कर ले जायेगा। भोला भाला बन्दर मगरमच्छ की पीठ पर बैठ जाता है।

त्वया सह गच्छेयम्– 'सह' के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग होता है। यहाँ 'त्वया' में युष्मद् शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया गया है। 'त्वया सह' का अर्थ होगा तुम्हारे साथ।

टिप्पणी

पाठगतप्रश्नाः 3.2

1. **अधोलिखितेषु कथनेषु सत्यम् (√) असत्यम् (×) इति चिह्नाङ्कनं कुरुत।**

(i) मकरः पृष्ठे आरूढं वानरं उद्यानं प्रति नयति। ( )

(ii) मकरी मकरं वानरम् आनेतुम् आदिशति। ( )

(iii) मकरः वानरं हन्तुम् इच्छति स्म। ( )

(iv) मकरी सरलहृदया आसीत्। ( )

(v) वानरः तरणं न जानाति स्म। ( )

2. **अधोलिखितकथनानि कः कम् प्रति कथयति इति लिखत।**

		कः	कम्
(i)	अहो तव मित्रं प्रतिदिनं मधुरं फलं खादति तस्य हृदयं कीदृशं मधुरं भवेत्?	....	....
(ii)	अद्य मम गृहे तव भोजनम् अस्ति।	....	....
(iii)	अहं तु तरणे असमर्थः।	....	....
(iv)	पृष्ठे आरूढं त्वां नयामि।	....	....
(v)	अहं न जानामि। तम् अवश्यम् आनय।	....	....

3.2.3 तृतीयः एकांशः

जलमध्ये .... मैत्री।

विपरीत परिस्थिति में फँसने पर 'अब मैं क्या करूं' ऐसा प्रश्न स्वाभाविक है। मगर भी जब पानी के बीच में पहुँच जाता है तब वानर को सच्चाई बताता है। वानर यह जानकर भी कि उसकी मृत्यु निकट है, धैर्य से काम लेता है और मगरमच्छ को कहता है कि उसका हृदय तो पेड़ पर ही रह गया। मूर्ख मगरमच्छ दुबारा उसे समुद्र के किनारे पर ले आता है। वानर की जान बची। वह उछलकर पेड़ पर पहुँच जाता है और मगरमच्छ को कहता है कि जा, अब पत्नी को प्रसन्न कर। हमारी मित्रता तो समाप्त हुई।

विपत्ति के समय शक्ति, पैसा इत्यादि काम नहीं आते। धैर्य से ही उपाय खोजा जा सकता है। क्रोध और भय, बुद्धि और विवेक को नष्ट कर देते हैं।

> समुत्पन्नेषु कार्येषु बुद्धिर्यस्य न हीयते।
> स एव दुर्गं तरति जलस्थो वानरो यथा।।

अन्वयः

यस्य बुद्धिः समुत्पन्नेषु कार्येषु न हीयते, स एव दुर्गम् तरति यथा जलस्थः वानरः।

समुत्पन्नेषु कार्येषु – काम पड़ने पर, विपत्तियों के आने पर।

न हीयते – क्षीण नहीं हो जाती, नष्ट नहीं हो जाती।

स एव दुर्गं तरति – वही कठिन परिस्थिति को पार कर जाता है।

पाठगतप्रश्नाः 3.3

1. **अधोलिखितवार्तालापे रिक्तस्थानपूर्त्तिं कुरुत।**

मकरः– जानासि किम्? (i) .... त्वां नयामि इति।

त्वदीयं मधुरं हृदयं (ii) .... इच्छति तव (iii) ....।

वानरः– पूर्वं कथं न कथितं (iv) ....?

मम (v) .... तु कोटरे तिष्ठति।

मां तं (vi) .... प्रति नय।

वानरः (उत्प्लुत्य) भो मूर्ख! न कोऽपि जीवः हृदयं (vii) .... जीवति। समाप्ता (viii) .... मैत्री।

2. **विलोमशब्दैः सह योजयत**

'क' स्तम्भः	'ख' स्तम्भः
(i) पूर्वम्	(क) प्रारब्धा
(ii) समाप्ता	(ख) विद्वान्
(iii) मधुरं	(ग) प्रतिवदति
(iv) नयामि	(घ) कटु
(v) पृच्छति	(ङ) पश्चात्
(vi) मूर्खः	(च) आनयामि

किमधिगतम्?

- विपत्तौ धैर्यं धारणीयम्।
- मित्राणां चयनं अवहितेन मनसा करणीयम्। षड्विधं मित्रलक्षणम्।
- क्त्वा, ल्यप् प्रत्ययादीनां साहाय्येन वाक्यानि योज्यन्ते।
- विशेषणेषु विशेष्यवत् विभक्तिः, वचनं लिङ्गं च प्रयुज्यते।
- पद्यस्य अन्वयः गद्यात्मकरूपेण भवति।

योग्यता-विस्तारः

(क) कवि परिचय

यह कथा पञ्चतन्त्र के चतुर्थ तन्त्र लब्धप्रणाश की प्रथम कथा है। इसे सरल भाषा में फिर से लिखा गया है। पञ्चतन्त्र के लेखक विष्णुशर्मा हैं। नीतिपरक कथाओं के लिए पञ्चतन्त्र प्रसिद्ध है। पशु-पक्षी आदि के स्वभाव का मानवीकरण करके कथाओं को एक-दूसरे में पिरोया गया है। एक कथा के अंत में दूसरी कथा जुड़ती है। प्राणघातक संकट उपस्थित करके विपरीत परिस्थिति को भी सुलझाने में कवि की असाधारण प्रतिभा देखने को मिलती है। इन कथाओं की उपयोगिता आज भी उतनी ही है जितनी आज से दो हजार वर्ष पूर्व थी।

(ख) भावविस्तार

इस कथा के माध्यम से जीवन में धैर्य की महत्ता को दर्शाया गया है। सभी को मित्रों की आवश्यकता होती है। मित्रों के चयन में सजगता आवश्यक है। संकट की घड़ी में धैर्य एक उपयोगी गुण है। देश, काल, परिस्थिति के अनुरूप सही समय पर कार्य करने पर सफलता मिलती है। यही इस कथा का केन्द्रीय भाव है।

(ग) भाषाविस्तार

विशेषण, अव्यय, सर्वनाम, आदि से वाक्य सुन्दर और सटीक बनते हैं; भाव विस्तार में भी सहायता मिलती है। किंवदन्तियाँ, लोकोक्तियाँ, मुहावरे, सूक्तियाँ आदि के उचित प्रयोग से भाषा में प्रौढ़ता आती है। धातुओं से शब्द-निर्माण करने के लिए कृत प्रत्ययों को जोड़ा जाता है। इसी प्रकार नए शब्दों का निर्माण करने के लिए तद्धित प्रत्ययों का प्रयोग करते हैं तथा शब्दों से क्रिया (धातु) के निर्माण के लिए संस्कृत भाषा में नामधातु आदि प्रत्ययों का विधान है फिर उनसे 'ति' आदि प्रत्यय जोड़कर क्रियापद बनाए जाते हैं।

(i) विशेष्य-विशेषण की अन्विति-

नियम- **यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिर्विशेष्यस्य।**
तल्लिङ्गं तद्वचनं सा च विभक्तिर्विशेषणस्य॥

अर्थात् - विशेष्य के वचन, लिङ्ग और विभक्ति के अनुसार ही विशेषण पदों में भी वचन, लिङ्ग और विभक्ति प्रयुक्त होते हैं।

सुन्दरः पुरुषः। एकः पुरुषः। द्वौ पुरुषौ। त्रयः पुरुषाः। चत्वारः वेदाः।

सुन्दरी नारी। एका नारी। द्वे लते। तिस्रः नद्यः। चतस्रः उपनिषदः।

सुन्दरम् पुष्पम्। एकम् फलम्। द्वे फले। त्रीणि पत्राणि। चत्वारि अङ्गानि।

(ii) अव्ययपद निम्नलिखित प्रकार के होते हैं-

स्थानवाचक	प्रकार बोधक
	यथा - जैसे
अत्र = यहाँ	तथा = वैसे
तत्र = वहाँ	सर्वथा = सभी तरह से
कुत्र = कहाँ	इत्थम् = इस प्रकार
अत्रत्यः = यहाँ का	कथम् = कैसे
तत्रत्यः = वहाँ का	ईदृशम् = ऐसे (इस प्रकार)
कुत्रत्यः = कहाँ का	तादृशम् = उस प्रकार
	कीदृशम् = किस प्रकार
विभक्ति बोधक-	**कालबोधक-**
कुतः = कहाँ से	यदा = जब
	तदा = तब
ततः = वहाँ से	कदा = कब
इतः = यहाँ से	इदानीम् = अब
सर्वतः = सभी ओर से	तदानीम् = तब

विशेष– धातुओं से 'क्त्वा' 'ल्यप्' 'तुमुन्' प्रत्यय लगे पद भी अव्यय होते हैं– गत्वा, कृत्वा, आगत्य, आकृष्य, कर्तुम्, गन्तुम् आदि।

(iii) क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्

'क्त्वा का अर्थ है करके जैसे गत्वा = जाकर, कृत्वा = करके। 'क्त्वा' में 'त्वा' शेष रहता है। यह प्रत्यय हमेशा धातु से ही जुड़ेगा। जब धातु से पूर्व उपसर्ग जुड़ जाता है तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग होता है, जैसे आ + गम् + ल्यप् = आगत्य (आकर) ल्यप् में 'य' शेष रहता है।

'तुमुन्' प्रत्यय 'के लिए' अर्थ में प्रयुक्त होता है जैसे– खादितुम् = खाने के लिए, गन्तुम् = जाने के लिए।

(iv) त्व एवं तल् (ता) प्रत्यय–

भाव को बताने के लिए इनका प्रयोग होता है। जैसे– मनुष्य = मनुष्यत्व, मनुष्यता; मानव = मानवत्व, मानवता। शब्द से नए भाववाचक शब्द बनाने के लिए इस तद्धित प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे–

महत् + त्व = महत्त्व	महत् + (तल्) ता = महत्ता
गुरु + त्व = गुरुत्व	गुरु + (तल्) ता = गुरुता
लघु + त्व = लघुत्व	लघु + (तल्) ता = लघुता
पटु + त्व = पटुत्व	पटु + (तल्) ता = पटुता

पाठान्तप्रश्नाः

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत।

(i) रक्तमुखः वानरः कुत्र वसति स्म?

(ii) जम्बुवृक्षस्य द्वे विशेषणे लिखत।

(iii) 'करालमुखः तम् अपश्यत्' इत्यत्र 'तम्' पदेन कस्य बोधः भवति?

(iv) वानरस्य चत्वारि विशेषणपदानि लिखत।

(v) 'भवान् मम अतिथिः' इत्यत्र 'मम' पदेन कस्य बोधः भवति?

2. अधोलिखितवाक्येषु क्रियापदस्य चयनं कृत्वा वाक्यं पूरयत।

(i) तौ उभौ अपि .... (नृत्यन्ति/नृत्यतः/नृत्यति)

टिप्पणी

(ii) यूयं सर्वे किम् .... (कुरुथ:/कुरुथ)

(iii) आवां कदापि असत्यं न .... (वदामि/वदाव:/वदाम:)

(iv) ते बालिके विद्यालयं कदा .... (गच्छति/गच्छत:/गच्छन्ति)

(v) वयं भारतीया: शूरवीरा: .... (भवामि/भवाव:/भवाम:)

3. **संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखन्तु**

(i) वानर: सुन्दर: स्वस्थ: निर्भीक: इव कस्मै प्रतिभाति?

.... (करालमुख इति पदस्य प्रयोगं कुरुत)

(ii) वानरमकरयो: मध्ये कथं वार्ता अभवत्?

.... (सस्नेहम् इतिपदस्य प्रयोगं कुरुत)

(iii) मधुरतराणि फलानि मकरी कुत: प्राप्नोति?

.... (करालमुख इतिपदस्य प्रयोगं कुरुत)

(iv) वानरस्य हृदयम् आनय अन्यथा .... (पाठं पठित्वा वाक्यपूर्तिं कुरुत)

(v) मकरस्य पृष्ठे आरूढं वानरं मकर: किं कथयति? .... (पाठं पठित्वा लिखत)

4. **अधोलिखितेषु वाक्येषु कोष्ठकात् शब्दं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत ....**

(i) छात्र: अध्ययनं .... विद्यालयं गच्छति। (कृत्वा/कर्तुम्)

(ii) मकर: जम्बुफलानि गृहं .... भार्यायै यच्छति (गत्वा/गन्तुम्)

(iii) सा उपवासं .... जीवनं त्यजति। (कृत्वा/कर्तुम्)

(iv) तव भातृजाया तव हृदयं .... इच्छति। (खादित्वा/खादितुम्)

उत्तरतालिका

बोधप्रश्ना:

1. (i) मधुरै:, पूरित: (ii) वृक्षे, रक्तमुखनामक: (iii) सहचर: (iv) मैत्री (v) नयत:
2. क + 3, ख + 4, ग + 5, घ + 2, ङ + 1
3. (i) प्रतिदिनम् (ii) एकदा, (iii) अपि, (iv) यत्, (v) इति

पाठगतप्रश्नाः 3.1

1. (i) जम्बुवृक्षः (ii) जम्बुफलानि (iii) करालमुखः, (iv) मकरवानरयोः

2. (i) तस्मिन् वृक्षे रक्तमुखः नाम वानरः वसति स्म।

   (ii) समुद्रसमीपे फलैः पूरितः जम्बुवृक्षः आसीत्।

   (iii) करालमुखः मकरः वानरं पश्यति।

   (iv) मधुराणि जम्बुफलानि भक्षयतु।

   (v) उभौ तौ सुखेन कालं नयतः स्म।

3. (i) × (ii) √ (iii) × (iv) √ (v) ×

पाठगतप्रश्नाः 3.2

1. (i) × (ii) √ (iii) × (iv) × (v) √

2. (i) मकरी मकरम्, (ii) मकरः वानरम्, (iii) वानरः मकरम् (iv) मकरः वानरं (v) मकरी मकरम्।

पाठगतप्रश्नाः 3.3

1. (i) किमर्थम् (ii) खादितुम् (iii) भ्रातृजाया (iv) त्वया (v) हृदयम् (vi) वृक्षं (vii) विना (viii) आवयोः

2. (i) + ङ, (ii) + क, (iii) + घ, (iv) + च, (v) + ग, (vi) + ख

पाठान्तप्रश्नाः

1. (i) जम्बुवृक्षे, (ii) विशालः, फलैः पूरितः (iii) वानरस्य, (iv) चञ्चलः, बलिष्ठः, निर्भीकः, स्वस्थः (v) वानरस्य

2. (i) नृत्यतः (ii) कुरुथ, (iii) वदावः, (iv) गच्छतः, (v) भवामः

3. (i) करालमुखाय, (ii) सस्नेहं (iii) करालमुखात् (iv) जीवनं त्यजामि, (v) जानासि किं, किमर्थं त्वां नयामि?

4. (i) कर्तुं, (ii) गत्वा, (iii) कृत्वा, (iv) खादितुम्